International Journal of Advanced Education and Research
ISSN: 2455-5746; Impact Factor: RJIF 5.34
Received: 12-02-2020; Accepted: 13-03-2020; Published: 14-04-2020
www.alleducationjournal.com
Volume 5; Issue 2; 2020; Page No. 34-36

काशीनाथ सिंह के कथा–साहित्य की रचनात्मक उपलब्धियाँ

विनय शंकर
शोधार्थी, विश्वविद्यालय हिन्दी–विभाग, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार, भारत

सारांश
कथा–साहित्य सृजन और अभिव्यक्ति के नवीन आयामों के खोज और प्रयोगों के साथ ही भारतीय समाज और जनजीवन की आशा–आकाँक्षा, सुख–दुख, समता–विषमता, सहजता–जटिलता और भय तथा प्रेम आदि का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत करता है। जब व्यक्ति कुछ विचार या विमर्श करता है, तो उसके मन और मस्तिष्क में बहुत सारे भाव उत्पन्न होने लगते हैं। उन भावों को रूप देने के लिए वह कभी वाणी, कभी लेखन का प्रयोग करता है। साहित्य लेखन में भावों और विचारों की अभिव्यक्ति के लिए कथा–साहित्य से बेहतर कुछ नहीं सूझता। आज आधुनिक समय में उपन्यास और कहानी ही ऐसी विधा है, जिसमें कोई भी लेखक अपने भावों एवं विचारों को पूरी आत्मीयता एवं स्वतंत्रता के साथ अभिव्यक्त कर सकता है।

मूल शब्द: रचनात्मक उपलब्धियाँ, अभिव्यक्ति, आशा–आकाँक्षा

प्रस्तावना

कथा–साहित्य के माध्यम से समाज के हर पहलू को उजागर किया जा सकता है। इसीलिए काशीनाथ सिंह ने कथा–साहित्य को अपने लेखन का माध्यम बनाया। उनके लेखन में सबसे महत्त्वपूर्ण है, उनकी भाषा और कहानी कहने का सलीका, जब वह कहानी या उपन्यास लिखते या कहते हैं, तो पाठक को वह अपनी–सी मालूम होती है। यह उनकी सबसे बड़ी उपलब्धि है कि पाठक उनके लेखन में डूब जाता है और उसे यह एहसास रहता है कि यह किसी और की नहीं, बल्कि मेरी ही बात की जा रही है।

काशीनाथ सिंह ऐसे कथाकार हैं, जो कथा कहने के साथ–साथ कथा को गढ़ते भी हैं, वह आमजन की बात आमजन की भाषा में ही कहते हैं। व्याकरण से बँधे नहीं रहते। 'काशीनाथ सिंह' की भाषा के विषय में 'निर्मल वर्मा' कहते हैं कि, ''आत्म–उत्खनन अथवा आत्म–अन्वेषण का सबसे सक्षम आयुध भाषा है।''(1)

काशीनाथ सिंह की भाषा में एक पैनापन हैं, जो किसी को भी अपनी ओर खींच लेती है। वह व्यंग्य भी इतनी सरलता एवं सहजता के साथ करते हैं, जिसे ऊब और खीझ की कलात्मक अभिव्यक्ति माना जा सकता है। उनकी भाषा में व्यंग्य की तीखी धार इस बात का प्रमाण है कि उनकी भाषा जीवन–संघर्ष की भाषा है। काशीनाथ सिंह की भाषा में जो व्यंग्य है, धार है, नुकीलापन है, वह किसी अन्य की भाषा में नहीं है। यही उपलब्धि उनको अन्य कथाकारों से अलग पहचान दिलाती है।

उनकी रचनाओं में भ्रष्टाचार, राजनीति और भूमंडलीकरण के प्रभाव से तबाह हो रहे गाँव, नगर व शहर को यथार्थ के धरातल पर रेखांकित किया गया है। उपन्यास में वर्तमान समय में बढ़ती आधुनिक तकनीक, भूमंडलीकरण के प्रभाव को आत्मसात करता आदमी और राजनीति में फैले भ्रष्टाचार से बर्बाद जन, मानवता के बीच टूटते परिवार और रिश्ते–नाते, सुख–शान्ती के लिए तड़प रहे हैं। इस तरह के शिल्प को गढ़ना कोई आसान बात नहीं है।

काशीनाथ सिंह की भाषा, जो किसी बंधन या व्याकरण में बंधी नहीं रहती है। वे बात को स्पष्ट और आमजन की भाषा में बेबाकी से कहते हैं, बिना किसी लाग–लपेट के। लेखक की भाषा को प्रभावशाली एवं बारीकियों को समझने की वकालत करते हुए नामवर सिंह लिखते हैं कि, ''लेखक भाषा में लिखता है और भाषा उसकी बनाई हुई नहीं है। उसे बहुत दिनों में एक पूरे समाज ने बनाया है। इसलिए अक्सर ऐसा होता है कि लेखक लिखना कुछ और चाहता है, लिख कुछ और जाता है जैसे फैज ने लिखा है कि 'दिल से तो हर मुआमला करके चले थे साफ हम। कहने में उसके सामने बात बदल–बदल गई।' इसका मतलब है लेखक में भाषा का बहुत दखल होता है।''(2)

काशीनाथ सिंह की उपलब्धि का सबसे बड़ा प्रमाण 'काशी का अस्सी' जिसकी जुगत किसी अन्य कथाकार के सामने प्रश्न चिन्ह लगाती है। काशीनाथ ने जब भी लिखा बेबाकी से निर्भीक होकर लिखा। वह किसी दबाब या मोहताजी में नहीं लिखते, बल्कि स्वतंत्र होकर आजादी से निडर होकर लिखते हैं, जिस पर प्रमोद यादव से बातचीत में छपे दैनिक जागरण के एक अंश में काशीनाथ सिंह कहते हैं कि, ''निजी जीवन के प्रेम–प्रसंगों पर दिल कहता है, लिखने को, पर लिख नहीं सका। उसमें अकेले मेरी चीज़ नहीं, दूसरे का भी समान हिस्सा रहा है। उस दूसरे की आज पूरी दुनिया और घर–संसार है। लगा कि उसमें किसी तरह का खलल न पड़े। प्रेम–प्रसंगों के सिवा ऐसा कुछ नहीं, जिस पर दिल और दिमाग दो राह हुए हों। हमेशा निर्भीक होकर लिखा, 'काशी का अस्सी' प्रमाण है।''(3) 'काशी का अस्सी' से लेकर 'रेहन पर रग्घू' तक की यात्रा और कथ्य एवं शिल्प का नया प्रयोग तथा भाषा पर बेजोड़ अधिकार कथाकार की अपनी मौलिक उपलब्धि है, जो लिखने के लिए नया जोश पैदा करती है। लेखक अपने लेखन में लिखता है कि ''अगर काशी का अस्सी मेरा नगर था, तो रेहन पर रग्घू मेरा घर है– शायद आपका भी।''(4)

'रेहन पर रग्घू' उपन्यास में भूमंडलीकरण के दौर में एक भारतीय मध्यवर्गीय परिवार की कहानी को अभिव्यक्त किया गया है। यह कहानी सिर्फ भारतीय परिवार की ही नहीं, बल्कि ये यूरोप के परिवार की भी कहानी है। काशीनाथ सिंह ने इस उपन्यास के माध्यम से भूमंडलीकरण, उदारीकरण, निजीकरण का बढ़ता प्रभाव किस तरह से भारत से लेकर अमेरिका तक और शहर से लेकर हर गाँव तक तथा हर व्यक्ति की मानसिकता पर हावी होता जा रहा है, जिससे वह बचते हुए भी अर्थात् न–न करते हुए भी उससे आत्मसात होता जा रहा है, जो भारत जैसे देशों के लिए खतरनाक है। इस यथार्थ को स्पष्ट शब्दों में नामवर सिंह लिखते

हैं कि, '''रेहन पर रग्घू' सच पूछिए तो एक गाँव की कहानी नहीं है, बल्कि पहाड़पुर से लेकर बनारस तथा फैलीफोर्निया तक, यानी भारत के एक गाँव से लेकर अमेरिका तक फैली हुई कहानी है, जिसको हम भूमंडलीकरण या बाजारवाद कहते हैं, उसके चलते गाँव में रहने वालों की जिंदगी पर क्या प्रभाव पड़ा है। रिश्ते बदले हैं, इंसान बदला है।''(5)

काशीनाथ सिंह समय के साथ कथ्य एवं शिल्प को बदलते हैं और भाषा का रूप भी परिवर्तित करते हैं। काशीनाथ सिंह की भाषा काबिले तारीफ है, जो उन्हें एक अलग पहचान दिलाती है। वह वाणी के ऐसे 'डिक्टेटर' है, जिसका कोई सानी नहीं है। उनकी भाषा पर विचार करते हुए अपने शब्दों में भाषा के विषय में रूसी चिन्तक विक्तोर श्क्लोव्स्की अपने लेख 'कथानक और शैली' में लिखते हैं, '''भाषा मनुष्य पर अधिकार नहीं करती, बल्कि मनुष्य भाषा पर अधिकार करता है और उसके विभिन्न पहलुओं को इस्तेमाल में लाता है। वह सड़क पर एक ढंग से बोलता है और घर पर दूसरे ढंग से, वह गाता एक ढंग से और सपने दूसरे ढंग से देखता है।' विक्तोर के इस कथन से आचार्य द्विवेदी के डिक्टेटर वाली बात याद आ जाती है। अगर आचार्य द्विवेदी और विक्तोर की बातों को मिलाकर विचार किया जाए तो काशीनाथ सिंह भाषा के मामले में डिक्टेटर ही कहे जाऐंगे, उनकी भाषा में एक गज़ब की मनचाही परिवर्तनशीलता है।''(6)

काशीनाथ सिंह की उपलब्धि के क्रमिक विकास पर विचार करते हुए चौथीराम यादव लिखते हैं कि, '''अपना मोर्चा', 'काशी का अस्सी', 'रेहन पर रग्घू' और 'महुआ चरित' को लेखक की उपन्यास यात्रा को क्रमिक विकास के रूप में देखा जाना चाहिए। ये सभी प्रगति और प्रयोगधर्मी कृतियां हैं।''(7) भूमंडलीकरण, निजीकरण और उदारीकरण की त्रयी ने आर्थिक जीवन को स्वीकृत करने के बाद संस्कृति को भी अपमानित या हानि पहुँचाना शुरू किया है। 'अपना मोर्चा' में जहाँ छात्रों की अपने अधिकारों की झुंझलाहट है, वहीं 'काशी का अस्सी' में नगरीय जीवन पर इसके दुष्प्रभावों की कथा है, तो 'रेहन पर रग्घू' में इसका ग्रामीण वृत्तांत और 'महुआ चरित में नारी की अस्मिता व अस्तित्व बोध का संघर्ष तथा उनके नए उपन्यास 'उपसंहार' में उत्तर महाभारत के कृष्ण का आख्यान है। काशीनाथ सिंह का उपन्यास 'उपसंहार' को नया उपन्यास के नाम से पुकारा जाता है, जो पूरी शक्ति व आत्मीयता के साथ पाठक के बीच खरा उतरता है। वे इस उपन्यास में महाभारत के बाद हुए नरसंहार को आधुनिक एवं नए रूप में दिखाने का कामयाब साहस करते हैं।

काशीनाथ सिंह ने जिस कलात्मकता के साथ अपने उपन्यासों की रचना की है, उसी कलात्मकता के साथ वह अपनी कहानियों को भी रचते हैं। वह कहानी लिखते समय अपने गाँव, पास–पड़ोस, मित्र और साथियों तथा माँ के संस्कार आदि को भी ध्यान में रखते हैं। कहानी के कथ्य को वह ऐसे गढ़ते हैं कि जिस चीज को वह देख रहे हैं, मानो पहली बार देखा हो और यह भी कि गोया इस धरती पर उसे देखने वाले वे पहले आदमी हो।

काशीनाथ सिंह जैसा व्यक्तित्त्व जो कहता है कि जीवन जीना सिर्फ अपने लिए नहीं है, बल्कि दूसरों के लिए जीने का मजा ही कुछ और है। उन्होंने बहुत सी कहानी तब लिखीं थी, जब वह लिखने का मतलब भी नहीं जानते थे। ऐसा लेखक जिसकी यह उपलब्धि है कि शुरूआती दौर की कहानियाँ, जब वह लिखने का मतलब नहीं समझता और वह कहानियाँ पाठकों, कथाकारों, विद्वानों द्वारा आलोचना का विषय बनी। ''इसी दौरान काशीनाथ सिंह की 'संकट', 'आखिरी रात', 'कस्बा जंगल और साहब की पत्नी', 'अपने लोग', 'आदमी का आदमी', 'लोग बिस्तरों पर' तथा 'सुख' जैसी कहानियाँ सामने आईं।''(8)

लेखक की उपलब्धि कथा कहना ही नहीं, बल्कि कथा गढ़ना है, मिसाल कायम करना है। व्यक्ति कितना स्वार्थी और अपनी इच्छा पूर्ति युक्त हो गया है कि वह किसी का सुख–चैन, दुःख–दर्द भी नहीं देखता। केवल अपनी इच्छा, अपनी चाहत की पूर्ति चाहता है। यह है आज के समाज का सच, जो आम है, जिससे कोई इनकार नहीं कर सकता है। यही लेखक की उपलब्धि, अलग पहचान है, जिसे लेखक ने अपनी कहानियों के माध्यम से दिखाने का साहस किया है।

'सुख' से लेकर 'सुबह का डर' तक की कहानियाँ काशीनाथ सिंह की 'लोग बिस्तरों पर' कहानी संग्रह की कहानियाँ हैं, जिसमें लेखक की कुछ कहानियाँ एक–दूसरे का विस्तार रूप में परिवर्तित होती हुई दिखाई पड़ती हैं, जो लेखक की उपलब्धि है। दूसरा कथ्य का अलग–अलग गढ़ना तथा अपने समकालीन लेखकों से भी अलग होना उससे भी बड़ी उपलब्धि है। साथ ही भाषा का सरलतम रूप लेखक को उच्च शिखर पर पहुँचाता है। विजय मोहन सिंह लिखते हैं, '''लोग बिस्तरों पर' की कहानियाँ इस मामले में भी अपनी पीढ़ी की अधिकांश कहानियों से अलग हैं कि वे आत्मकथाएँ कम से कम हैं अर्थात् कहानीकार कहानी की वस्तुगता से अधिक परिचित है।''(9) यह है मैच्योर होते लेखक की उपलब्धि है, जो इस समय तक लिखने का मतलब भी नहीं जानता, लेकिन ऐसी कहानी लिखता है, जो अपने पीढ़ी के कथाकारों से आगे निकल जाता है। काशीनाथ सिंह का कथ्य तोड़ने का स्टाइल और भाषा में भदेसपन का होना उपलब्धि की उत्कृष्टता का मानदंड है।

काशीनाथ सिंह जो अपनी शैली व शिल्प के लिए विख्यात हैं। उनकी यही बड़ी उपलब्धि है कि छोटी से छोटी कहानी में बड़ी–बड़ी बात को उजागर करते हैं अर्थात् कम–से–कम शब्दों में अधिक–से–अधिक भाव को उजागर करते हैं। यदुनाथ सिंह कहते हैं कि, ''काशीनाथ सिंह यथार्थ की वस्तुपरकता और विचारधारा पर आधारित परिकल्पना की अमूर्तता के द्वंद्व को ऐसे शिल्प में निरूपित करते हैं कि हम स्थूल वस्तु का साक्षात्कार करने के बजाय अनुभूति के मूर्त आधार में से होकर गुजरने का अनुभव प्राप्त करते हैं।''(10)

काशीनाथ सिंह अपनी इन तमाम कहानियों के माध्यम से अलग–अलग तरह से कथ्य गढ़ते हैं और समाज में चारों तरफ फैली समस्याओं को परत–दर–परत उजागर करते हैं। लेखक की कहानियाँ एक दूसरी कहानी से अलग होती है और अलग ही भाषा में गढ़ी होती है। काशीनाथ सिंह अपनी कहानियों में समस्या को उठाते भी हैं साथ ही उसका समाधान भी बताते चलते हैं, उनकी कहानियाँ एक नई जानकारी की प्राप्ति करवाती हैं। 'सदी का सबसे बड़ा आदमी' से लेकर 'अपना रास्ता लो बाबा' तक की कहानियों में कई ज़िंदगियाँ हैं, कई समाज है और काशीनाथ सिंह इन ज़िंदगियों को जीते हैं, तभी वह बड़े ही यथार्थ रूप में अपने विचारों की अभिव्यक्ति प्रदान करते हैं। लेखक की भाषा में एक खास तरह का जादू है तथा साथ ही कहानी कहने का सलीका भी, जिसका आकलन हम यथार्थ के धरातल पर करते हैं। यही खासियत, यही पैनापन लेखक की उपलब्धि है।

संवाद–कला में भी काशीनाथ ने अपना अप्रतिम परचम लहराया है। कहीं–कहीं तो संवाद इतनी करारी चोट करता है कि दिल थाम लेने का मन करता है। 'कविता की नई तारीख' की सोना अपनी बहन को फटकारते हुए कहती है ''बदला मैं तुमसे क्या लूँगी, जिसे यह ही नहीं मालूम कि उसके बाप को गुजरे कै महीने हो गए और भाई घर पर है या जेल में?''(11) उसी कहानी का अफसर, ''आपको मालूम है, हम अफसरों में कवि का क्या मतलब है? कवि का अर्थ है फटीचर, चूतिया, कामचोर, निठल्ला, चिरकुट... बुरा न मानेंगे आप।''(12) लेखक के द्वारा प्रकृति का इतना मनमोहक चित्रण और संवाद–कला का मार्मिक रूप किसी के भी हृदय को छू सकता है। यह उपलब्धि कथाकार की मन को हरने वाली है।

काशीनाथ सिंह ने प्रेमचंद के बाद एक बार फिर नए कथ्य के साथ व्यक्ति की भूख को उजागर किया है। प्रेमचंद की कहानी 'कफ़न' में इसी भूख को दिखाया गया है, उसी भूख को काशीनाथ सिंह 'कहानी सराय मोहन की' में दिखाते हैं, ''प्रेमचंद हिन्दुस्तान को जहाँ छोड़कर गए थे, उसके आगे की कड़ी कहाँ है? जिन लोगों ने काशीनाथ सिंह की कहानियाँ नहीं पढ़ी हैं, उनके हाथ इस मुद्दे पर केवल निराशा लगती है। रामनाथ, ज्ञानशंकर, गौस खाँ, रायसाहब, होरी, गोबर, धनियां कहीं उड़ गए क्या? जमींदारी टूटने यानी जमींदार और रिआया का संबंध परिवर्तित होने मात्र से पात्र हवा में नहीं उड़ गए। इनकी ठोस ज़मीन है। यह उखड़े नहीं हैं। कैसे नहीं उखड़े हैं? यह सब जानने के लिए प्रेमचन्द के बाद के भारत की तस्वीर देखनी चाहिए। चित्र देखना चाहिए। ये चित्र कहाँ टँगे हैं? कहाँ हैं? काशीनाथ सिंह की कहानियों में ये तस्वीरें खींची गईं हैं और चित्र भी टाँगे गए हैं। होरी और धनिया की तस्वीरें खींची हैं, नए संघर्षशील समाज में और राय साहब, गौस खाँ टाँगे गए हैं, जनता के भीतर से उभरी हुई नई सलीबों पर और इन सबके भीतर से प्रेमचंद भी झाँक रहे हैं। प्रेमचंद यानी बात कहने का वही सीधा–सादा अंदाज़, वही बेलौस बोली, वही खेत, वही खेत–मोह, वही गाँव, वहाँ के वही पण्डित, वही ठाकुर, वही वर्ग–मर्यादा। इन सबके प्रति वही विद्रोह जो नए रूप में सज–धज कर स्वाभाविक रूप में बढ़ा है।''(13)

काशीनाथ सिंह इस दौर के उन कथाकारों में से एक हैं, जिन्होंने तत्कालीन समाज, परिवेश और जन के भावों को समझा है। वो भी गहराई के साथ फिजूल, बेमतलब का बिल्कुल नहीं। यह कथाकार की विचारशीलता है, जो बढ़ती आधुनिक तकनीक में अंधा व्यक्ति, भूमंडलीकरण की प्रगति में चिमटे व्यक्ति को प्रगतिशील होकर अपने कथा–साहित्य के माध्यम से अभिव्यक्त करते हैं। यह काशीनाथ सिंह की उपलब्धि है कि अपने दौर में प्रेमचंद उस समय के यथार्थ को उजागर करते हैं। इस दौर में काशीनाथ सिंह ने आज के यथार्थ को अभिव्यक्त किया है।

निष्कर्ष

काशीनाथ सिंह की कथात्मक कृतियाँ प्रमाणित करती है कि इन्होंने प्रयोगवादी और प्रगतिवादी दोनों ही प्रवृत्तियों से तटस्थ रहकर कथा–साहित्य की कथात्मक रोचकता तथा सहज धर्मिता की रक्षा करते हुए अपने जीवन और जगत के अनुभवों और यथार्थों को एक नई अखण्डता और निरन्तरता प्रदान की है और इस प्रकार हिन्दी कथा–साहित्य को एक नई दिशा दिखाने में सफलता प्राप्त की है। वे यथार्थ जीवन के चित्रकार हैं और अपने चित्रों में मानवीयता और सार्थकता भरने के प्रयत्न में उन्होंने कई नए अभिव्यंजनात्मक प्रयोग किए हैं, जो सुसफल रहे हैं और यही इनकी रचनात्मक उपलब्धि है।

संदर्भ–स्रोत

1. वर्मा, निर्मल : दूसरी दुनिया एक आत्मसंचयन, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण–2007, पृ. 210.
2. संपादक कमर मेवाड़ी : संबोधन त्रैमासिक पत्रिका (अक्टूबर–2012, जनवरी–2013), राजस्थान, अंकः 1–2, पृ. 194–195.
3. संपादक दिलीप अवस्थी : दैनिक जागरण 20 सितंबर–2015, रविवार, पृ. 24.
4. संपादक कामेश्वर प्रसाद सिंह, चौपाल, वार्षिक–2014, अरुणा नगर, जिला, एटा, अंक–1, पृ. 159
5. वही, पृ. 27
6. संपादक कमर मेवाड़ी : संबोधन त्रैमासिक पत्रिका (अक्टूबर–2012, जनवरी–2013), राजस्थान, अंकः 1–2, पृ. 201.
7. संपादक कामेश्वर प्रसाद सिंह : चौपाल वार्षिक 2014, अरुणा नगर, जिला एटा, अंक–1, पृ. 30.
8. कृष्ण कुमार : कहानी के नए प्रतिमान, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2005, पृ. 110.
9. कृष्ण कुमार : कहानी के नए प्रतिमान, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2005, पृ. 111.
10. सिंह, यदुनाथ : समकालीन कहानी के रचनात्मक आशय, ओमप्रकाश, दिल्ली, पृ. 100–101
11. संपादक कमर मेवाड़ी : संबोधन त्रैमासिक पत्रिका, अक्टूबर–2012, जनवरी–2013, राजस्थान, अंकः 1–2, पृ. 90.
12. सिंह, काशीनाथ : कहनी उपखान, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2003, पृ. 384.
13. संपादक कमर मेवाड़ी : संबोधन त्रैमासिक पत्रिका (अक्टूबर–2012, जनवरी–2013), राजस्थान, अंकः 1–2, पृ. 82.